कक्षाः नौवीं
पशुपालन

मास	पुस्तक का नाम	विषय वस्तु	शिक्षण के पीरियड	दोहराई के पीरियड
अप्रैल				
मई	प्रथम अध्यायः	पशुधन का राष्ट्रीय आर्थिकता में महत्व। कृषि में पशुओं का स्थान, खाद्य पदार्थो में पशुओं का स्थान, डेरी उद्योग तथा रोजगार में पशुओं का स्थान। मृतक पशुओं का योगदान, पशुओं का घरेलूकरण, पशुओं का सांख्यिकीय विवरण तथा उत्पादन सम्बन्धी आंकड़े हरियाणा राज्य व भारत।	20	
जून				
जुलाई	द्वितीय अध्यायः	पशुओं का वर्गीकरण तथा नस्लें। पशुओं का वर्गीकरण, पशुओं की नस्लें–भारत में गाय तथा भैसों की मुख्य नस्लें।	20	
अगस्त	द्वितीय अध्यायः	पशुओं का वर्गीकरण तथा नस्लें। भारत में बकरियों की नस्लें, सुकरों(सुअरों) की नस्लें, मुर्गियों की नस्लें।	20	
सितम्बर	तृतीय अध्यायः	वैज्ञानिक पशु व्यवस्था के सिद्धांत एवं महत्व प्रजनन, घांटी आहार व्यवस्था, देखभाल, सींगहीन करना, पशुओं की पहचान नम्बर लगाना, कानों में नम्बर बाधंना, कान कतरना, ठप्पा लगाना।	15	
अक्तूबर	तृतीय अध्यायः	वैज्ञानिक पशु व्यवस्था के सिद्धांत एवं महत्व भेड़ों और मुर्गियों में पहचान का चिन्ह लगाना, चौंच काटना, शारीरिक स्वच्छता एवं मालिश आदि बाल काटना, भेड़ों की ऊन उतारना, पशुओं के शरीर को धोना या पशुओं को नहलाना, पशुओं में बुरी आदतें तथा उनका निवारण, मुर्गियो में बुरी आदतें तथा उनका निवारण।	15	
नवम्बर	चतुर्थ अध्यायः	निवास स्थान ग्राम स्तर पर पशुओं के निवास स्थान तथा उनमें दोष, पशुओं के लिए उचित भवन, गावों के निवास स्थान में रखने	20	

		का ढंग, निवास स्थान के अतिरिक्त आवश्यकताएं। पशुओं के निवास स्थान की सफाई, देहातों में मुर्गीघरों के दोष, मुर्गीघरों की आवश्यकताएं, आदर्श मुर्गीघरों की विभिन्न विधियां, आदर्श मुर्गीधरों में आवश्यक सामान भेड़ों के निवास स्थान।		
दिसम्बर	अध्याय:5	पशुओं के रोग। रोग जांच आंकड़े, भिन्न–भिन्न पशुओं की औसत आयु, पशुओं में रोग के लक्षण, रोगों का वर्गीकरण, सुक्ष्म विषाणु रोग, शरीर के अंग सम्बन्धी रोग(मुहं में छाले होना, अपचन, गला रुकना, आफरा, पेट बन्ध पड़ना, दस्त लगना, मरोड़ पेचिश, कब्ज होना, न्यूमोनिया, पेट का दर्द, दुग्ध ज्वर, गर्भाशय का दाह)।	20	
जनवरी	अध्याय:5	पशुओं के रोग। शरीर के अंग सम्बन्धी रोग– जेर का रुकना, योनि या गर्भाशय का उल्ट कर बाहर आना, लू लगना, नाभि रोग, बछड़ों में सफेद दस्त, आखें दुखना, घाव व उनका उपचार, बन्ध लगाना, सींग टूटना, पशुओं के रोगों के बचाव के टीके, क्वरनटीन, दवाई पिलाना, कीट रहित करना, खुरिया कुंड डीपिंग, दवाई छिड़कना, टकोर देना या सेका देना, मालिश करना, भाप सुघांना, पलस्तर बाधंना, अनीमा करना, बधिया करना, खस्सी करना।	20	
फरवरी		Revision		
मार्च		Exam		

कक्षाः नौवीं
विषयः पशुपालन
प्रायोगिक पाठ्यक्रम

पशुओं के अंगों का परिचय
गाय के शारीरिक अंगों का परिचय।

कुक्कुट(मुर्गे) के अंगों का शारीरिक परिचय
पशुओं के उपचार हेतु नियत्रिंत करने की विधि।

पशुओं को दवाई पिलाना।
सुखी दवाई बुरकना।

दवाई छिड़कना
पशुओं को दवाई का घोल लगाना।

अपरुपण– बाल या ऊन उतारना।
पशुपालन सम्बन्धी विभिन्न कार्य प्रसिद्ध यन्त्र तथा उनका प्रयोग, पशुओं का भार ज्ञात करना।

पशुओं का गर्भ समय, पशुओं की आयु का अनुमान दांतों तथा सीगो से लगाना।

पशु के नम्बर लगाना
दागना, खरहेरा करना।

पशु चिकित्सा सम्बन्धी विभिन्न कार्य– थर्मामीटर का प्रयोग।

पशु चिकित्सा संबंधी विभिन्न कार्य– नब्ज देखना, सांस की गति